Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.09, April, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

Knowledgeable Research
ISSN 2583-6633
Vol.02, No.09, April, 2024
http://knowledgeableresearch.com/

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन

प्रिया शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय, शाहजहाँपुर
Email: priyaspn82082@gmail.com

****

शोध सार: *प्रकृति का क्षेत्र अधिक विस्तृत तथा रहस्यमय है जो कि पर्यावरण के साथ जुड़ा हुआ है। मनुष्य विकसित तथा सामाजिक प्राणी है इसलिए वह प्राकृतिक घटनाओं का ज्ञान व उसके कारण ढूंढता है। प्रकृति की गोद में बालक जाकर प्राकृतिक दृष्यों का बोध करता है और आँखों से देखकर, हाथों से स्पर्श कर उन्हें समझ लेता है। वर्तमान में गिरते पर्यावरणीय मानकों को पुनः स्थापित करने हेतु हमें युवाओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने का निश्चय किया है। अध्ययन का उद्देश्य स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन लिंग तथा क्षेत्रीय आधार पर करना है। अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन जनपद शाहजहाँपुर के महानगर क्षेत्र में स्थित तथा महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध सभी 05 महाविद्यालयों में से प्रत्येक महाविद्यालय से 50 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का चयन लॉटरी विधि से किया गया है। इस प्रकार न्यादर्श के रूप में कुल 100 विद्यार्थी चयनित किये गये हैं। जिनमें से 54 छात्र तथा 46 छात्रायें सम्मिलित हैं। प्रस्तुत शोध के अध्ययन हेतु स्नातक स्तर के छात्रों–छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता के मापन हेतु 'डॉ0 प्रवीन कुमार झा' द्वारा निर्मित 'पर्यावरण जागरूकता मापनी' (EAAM) का प्रयोग किया गया हैं। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर है। जबकि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।*

सूचक शब्द. *स्नातक स्तर, पर्यावरण, जागरूकता।*

********** ********** ********** ********** ********** **********

प्रस्तावना:–

शिक्षा मानव जीवन के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। जब किसी राष्ट्र या समाज में परिवर्तन व जन–चेतना की आवश्यकता का अनुभव हुआ है तब बुद्धिजीवी वर्ग की निगाहें शिक्षा पर ही आकर टिकी है। इसी को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण रक्षा के लिए वर्तमान में पर्यावरणीय शिक्षा को प्रत्येक स्तर के पाठ्यक्रम में विशेष स्थान दिये जाने पर जोर दिया जा रहा है। पर्यावरणीय रक्षा हेतु विश्वस्तरीय प्रयास भी किए गय हैं। अनेक

Author Name: प्रिया शर्मा
Received Date: 11.04.2024
Publication Date: 25.04.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.09, April, 2024
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का ध्यान इस ज्वलंत समस्या की ओर है। विश्व स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में रिपब्लिक ऑफ कोरिया में नेशनल काउन्सिल की स्थापना प्रकृति के संरक्षण के लिए की है। जो कि राष्ट्र के सभी व्यक्तियों को पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान करने का कार्य सम्भालती है। पर्यावरण के अध्ययन के संदर्भ में यूनेस्को कार्य समिति (1970) तथा मानव पर्यावरण पर स्टॉक होम (1972) में आयोजित हुए अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन में भी यही बात रखी गई कि पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम की सम्भावना को मूर्त रूप दिया जाये।

पर्यावरण शब्द की व्युत्पत्ति एक फ्रांसीसी शब्द एनवायरन से हुई है। जिसका अर्थ है घेरना। यह अजैविक (भौतिक या निर्जीव) और जैविक (जीवित) पर्यावरण दोनों को संदर्भित करता है। पर्यावरण शब्द का अर्थ है परिवेश, जिसमें जीव रहते हैं। पर्यावरण और जीव प्रकृति के दो गतिशील और जटिल घटक है। पर्यावरण मानव सहित जीवों के जीवन को नियंत्रित करता है। मनुष्य अन्य जीवों की तुलना में पर्यावरण के साथ अधिक तीव्रता से अतः क्रिया करता है। सामान्यता पर्यावरण से तात्पर्य उन पदार्थो और शक्तियों से है जो जीवित जीवों को घेरे रहते है। वह सब कुछ जो सजीव और निर्जीव का गठन करता है, पर्यावरण का निर्माण करता है।

डगलस, हॉलैण्ड के अनुसार, ''पर्यावरण में वह सभी भौतिक, रासायनिक, जैविक एवं सांस्कृति कारक आते है जो किसी भी तरह से जन्तुओं के जीवन को प्रभावित करते है''।

बोरिंग के विचार में, ''एक व्यक्ति के पर्यावरण में वह सब कुछ सम्मिलित किया जाता है जो उसके जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक प्रभावित करता है''।

अनास्टसी के शब्दों, ''व्यक्ति के वंशानुक्रम के अतिरिक्त वह उसके जीवन मापन को प्रभावित करता है''।

यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन (1972) में पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्यों का प्रतिपादन किया गया। जिसमें सभी स्तरों तथा औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा के उद्देश्यों का विशिष्टीकरण किया गया। विश्वस्तरीय प्रयासों के साथ ही साथ राष्ट्रीय स्तर पर भी पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक नवीन संस्थाओं का गठन हुआ तथा समय–समय पर विभिन्न आयोगों ने भी पर्यावरणीय संरक्षण हेतु पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति एवं मूल्य परक शिक्षा को सम्मिलित करने का सुझाव दिया। स्नातक वर्ग में कला एवं विज्ञान के विद्यार्थी को उच्च शिक्षा संस्थाओं में यू0जी0सी0 द्वारा इस क्षेत्र में विशेष बल दिया जा रहा है। स्नातक स्तर पर भी निर्धारित पाठ्यक्रम के द्वारा एक निश्चित सीमा तक छात्रों में पर्यावरणीय के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन की भावना को उत्पन्न किया जा सकता है।

Author Name: प्रिया शर्मा
Received Date: 11.04.2024
Publication Date: 25.04.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.09, April, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

प्रकृति का क्षेत्र अधिक विस्तृत तथा रहस्यमय है जो कि पर्यावरण के साथ जुड़ा हुआ है। मनुष्य विकसित तथा सामाजिक प्राणी है इसलिए वह प्राकृतिक घटनाओं का ज्ञान व उसके कारण ढूंढ़ता है। खेत, बगीचे, नदी, झरने व जन्तु आदि पर्यावरण को सुन्दर व स्वच्छ बनाते है। प्रकृति की गोद में बालक जाकर प्राकृतिक दृष्यों का बोध करता है और आँखों से देखकर, हाथों से स्पर्श कर उन्हें समझ लेता है। यूनिसेफ ने प्राथमिक स्तर पर एक योजना पर्यावरणीय शिक्षा तथा यू0जी0सी0 ने स्नातक स्तर पर एक पाठ्यक्रम विकसित किया, जिन्हें दोनों संस्थानों ने विद्यालयों व महाविद्यालयों में शुरू कर दिया। इसके द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षण दिया जाता है। जिससे वे पर्यावरण के प्रति जागरूक भी हो सके। वर्तमान में गिरते पर्यावरणीय मानकों को पुनः स्थापित करने हेतु हमें युवाओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने का निश्चय किया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षणः–

रेड्डी, आर. श्रीदेवी और रेड्डी, डॉ. जी. लोकनधा (2022) द्वारा ''माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता और अभिवृत्ति' विषय पर किये गये शोध में पाया कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को पर्यावरण जागरूकता और दृष्टिकोण विकसित करने के लिए और अधिक व्यापक रूप से उन्मुखीकरण और प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने की व्यापक गुंजाइश है। इसी प्रकार, सरकार को माध्यमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा से संबंधित विषय–वस्तु को शामिल करने के लिए प्रयास करने चाहिए। **मस्तैनया, भुवनेश्वर सिंह (2023)** ने, 'माध्यमिक स्तर एवं जूनियर स्तर के अध्यापकों की पर्यावरणीय अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य किया। अध्ययन में शोधार्थी ने निष्कर्ष रूप में पाया कि माध्यमिक स्तर तथा उच्च माध्यमिक स्तर के अध्यापको की पर्यावरणीय अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है तथा **कल्यानी के. (2025)** ने अपने शोध अध्ययन में परिणाम लिंग के आधार पर पर्यावरणीय दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर दर्शाते हैं, जहाँ लड़कों में लड़कियों की तुलना में पर्यावरणीय दृष्टिकोण अधिक स्पष्ट है। स्कूल प्रबंधन के प्रकार ने भी इसमें भूमिका निभाई, क्योंकि सरकारी स्कूलों के छात्रों ने निजी सहायता प्राप्त छात्रों की तुलना में अधिक पर्यावरणीय दृष्टिकोण प्रदर्शित किया। इसके अतिरिक्त, अंग्रेजी माध्यम के छात्रों ने कन्नड़ माध्यम के छात्रों की तुलना में अधिक सकारात्मक पर्यावरणीय दृष्टिकोण प्रदर्शित किया। हालाँकि, शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

समस्या कथनः– स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन

समस्या में सम्मिलित शब्दों का परिभाषीकरण :–

Author Name: प्रिया शर्मा
Received Date: 11.04.2024
Publication Date: 25.04.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.09, April, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

- **स्नातक स्तरः–** प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर से आशय महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली द्वारा संचाालित स्नातक के पाठ्यक्रम यथा– बी0ए0, तथा बी0एस0सी0 से है।
- **विद्यार्थीः–** प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थी से तात्पर्य जनपद शाहजहाँपुर के महानगर क्षेत्र के महाविद्यालयों के बी0ए0 तथा बी0एस0सी0 के पंचम सेमेस्टर के सभी विद्यार्थियों से है।
- **पर्यावरण जागरूकताः–** पर्यावरण सम्बन्धी तथ्यों, प्रत्ययों, प्रक्रियाओं का ज्ञान तथा बोध कराया जाता है इसके अलावा पर्यावरण के कारकों तथा घटकों की पारस्परिक निर्भरता, समस्याओं तथा समाधान की जानकारी प्रदान की जाती है।

अध्ययन के उद्देश्यः–

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएंः–

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधिः– प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्याः– प्रस्तुत अध्ययन में जनपद शाहजहाँपुर के महानगर क्षेत्र में स्थित महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली से सम्बद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत् स्नातक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को जनसंख्या में शामिल किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श चयन विधिः– प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन जनपद शाहजहाँपुर के महानगर क्षेत्र में स्थित तथा महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध सभी 05 महाविद्यालयों में से प्रत्येक महाविद्यालय से 50 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का चयन लॉटरी विधि से किया गया है। इस प्रकार न्यादर्श के रूप में कुल 100 विद्यार्थी चयनित किये गये हैं। जिनमें से 59 छात्र तथा 41 छात्रायें सम्मिलित हैं।

Author Name: प्रिया शर्मा
Received Date: 11.04.2024
Publication Date: 25.04.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.09, April, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

उपकरणः– प्रस्तुत शोध के अध्ययन हेतु स्नातक स्तर के छात्रों–छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता के मापन हेतु 'डॉ0 प्रवीन कुमार झा' द्वारा निर्मित 'पर्यावरण जागरूकता मापनी' (EAAM) का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का संग्रहणः– शोधार्थी द्वारा अध्ययन में न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके चयनित उपकरण के माध्यम से आकड़ों का संग्रहण किया गया है। संग्रहीत आंकड़ों को निर्धारित सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से विश्लेषण किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषणः–

परिकल्पना संख्या 1 : ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

प्रस्तुत परिकल्पना के परीक्षण हेतु टी–मान का प्रयोग किया गया है। जिससे प्राप्त परिणाम तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित किये गए हैं–

तालिका संख्या 1

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता

परिकलित मूल्य	स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता सम्बन्धी परिगणनाएं	
	छात्र	छात्रायें
माध्य (Mean)	40.37	35.37
मानक विचलन (SD)	5.40	7.45
संख्या (N)	54	46
माध्य अन्तर(M_1 - M2)	5.00	
स्वतन्त्र्यांश (df)	98	
टी0 मान (t-value)	4.42	
5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर तालिका मान	1.96	
सार्थकता ¼Significant½	4.42>1.96 ¼अन्तर असार्थक, परिकल्पना स्वीकृत)	

Author Name: प्रिया शर्मा
Received Date: 11.04.2024
Publication Date: 25.04.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.09, April, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता के प्राप्तांकों का माध्य 40.37 तथा छात्राओं का माध्य 35.37 प्राप्त हुआ, जबकि मानक विचलन क्रमशः 5.40 तथा 7.45 प्राप्त हुआ है। अध्ययन से प्राप्त छात्र एवं छात्राओं के माध्यों के मध्य सार्थक अन्तर है। क्योंकि सार्थकता स्तर 0.05 पर टी–मान का परिकल्पित मान 4.42 तालिका मान 1.96 से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।

अतः शोधकार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के लिंग (छात्र/छात्रा) के आधार पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' माध्य का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का माध्य, छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता के माध्य की तुलना में थोड़ा अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता छात्राओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक है।

परिकल्पना संख्या 2 : ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ''

प्रस्तुत परिकल्पना के परीक्षण हेतु टी–मान का प्रयोग किया गया है। जिससे प्राप्त परिणाम तालिका संख्या 2 में प्रदर्शित किये गए हैं–

तालिका संख्या 2

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता

परिकलित मूल्य	स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता सम्बन्धी परिगणनाएं	
	ग्रामीण विद्यार्थी	शहरी विद्यार्थी
माध्य (Mean)	41.25	37.32
मानक विचलन (SD)	8.55	9.65
संख्या (N)	52	48

Author Name: प्रिया शर्मा
Received Date: 11.04.2024
Publication Date: 25.04.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.09, April, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

माध्य अन्तर(M_1 - M2)	3.93
स्वतन्त्र्यांश (df)	98
टी0 मान (t-value)	1.57
5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर तालिका मान	1.96
सार्थकता ¼Significant½	1.57<1.96 ¼अन्तर सार्थक, परिकल्पना अस्वीकृत)

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता के प्राप्तांकों का माध्य 41.25 तथा शहरी विद्यार्थियों का माध्य 37.32 प्राप्त हुआ, जबकि मानक विचलन क्रमशः 8.55 तथा 9.65 प्राप्त हुआ है।

अध्ययन से प्राप्त ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के माध्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं। क्योंकि सार्थकता स्तर 0.05 पर टी–मान का परिकल्पित मान 1.57 तालिका मान 1.96 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः शोधकार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की निवास क्षेत्र (शहरी/ग्रामीण) के आधार पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता सार्थक अन्तर नहीं है।

माध्य का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का माध्य, ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता के माध्य की तुलना में थोड़ा कम है। अतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा कम है।

निष्कर्षः–

1. छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर है।
2. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

Author Name: प्रिया शर्मा
Received Date: 11.04.2024
Publication Date: 25.04.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.09, April, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

सन्दर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. **मिश्रा, महेन्द्र कुमार (2007).** ''पर्यावरण अध्ययन एवं विधियाँ'' ज्ञान भारती प्रकाशन, जयपुर।
2. **गुप्ता, एस.पी. (2008),** 'आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन', इलाहाबादः शारदा पुस्तक प्रकाशन, यूनिवर्सिटी रोड।
3. **कालीराम, सिंह, वीरेन्द्र एवं रेखा (2012).** पर्यावरण शिक्षा. आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. **कपिल, एच.के. (2015),** 'अनुसंधान विधियाँ (व्यवहार परक विज्ञानों में)', आगराः भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट।
5. **गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, अलका (2022),** 'सांख्यिकीय विधियाँ', इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, युनिवर्सिटी रोड।
6. **Vemula, Muttu. & Devendar, Bhukya (2021)**, "A Study on the Environmental Awareness of Secondary Grade Students", *Nat. Volatiles & Essent. Oils,* Vol. 8, Issue.6, Page No.3327-3352.
7. **Reddy, R. Sreedevi & Reddy, G. Lokanadha (2022),** "Environmental Awareness and Attitude among Secondary School Students." *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)*, Vol. 10, Issue. 2 Page No. d46-d54. https://ijcrt.org/papers/IJCRT2202358.pdf
8. **मस्तैनया, भुवनेश्वर सिंह (2023)**. 'माध्यमिक स्तर एवं जूनियर स्तर के अध्यापकों की पर्यावरणीय अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन'. *Shrinkhala Ek Shodhparak Vaicharik Patrika,* X(VI), http://www.socialresearchfoundation.com/new/publish-journal.php?editID=5258
9. **Sowmya C, Sharath Kumar C R (2023).** A Study on Environmental Attitude Among Secondary School Students of Mysore District. *The International Journal of Indian Psychology*, 11(4), 1861-1868. https://ijip.in/wp-content/uploads/2023/12/18.01.173.20231104.pdf
10. **पालीवाल, माधुरी (2024).** 'पर्यावरण जागरूकता का वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन (स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के संबंध में). *Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*, 21(03), 06-08. https://ignited.in/index.php/jasrae/article/download/14761/29257
11. **Kalyani K. (2025).** Environmental Attitude among Secondary School Students. *International Journal of Engineering Technology and Management Sciences.* 2(09), 342-350. https://ijetms.in/Vol-9-issue-2/Vol-9-Issue-2-42.pdf

Author Name: प्रिया शर्मा
Received Date: 11.04.2024
Publication Date: 25.04.2024